Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

हर्षचरितम् में दर्शनशास्त्रीय विवेचन

रेखा जैसवार
शोधच्छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 86-89
Publication Issue :
September-October-2022
Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 10 Sep 2022

सारांश– इसमें बाणभट्टकृत हर्षचरित में उल्लिखित विभिन्न दार्शनिक तत्त्वों को उपस्थित किया गया है। बाण के हर्षचरित में षड्–दर्शन के प्रसंग उपलब्ध हैं जिसमें वस्तुतः सभी भारतीय विद्याओं के गम्भीर विवेचन में दार्शनिक विचारों का पुट मिलता है। इसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि दर्शन जीवन दृष्टि को देखने की विधा है। धर्म जीव की आचार्य पद्धति है तो दर्शन मनुष्य की बौद्धिक परिपुष्टि है। इस प्रकार हमें व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मुख्य शब्द– लोकायत, आर्हत्, बौद्ध, कोश, त्रिसरण, प्रमाण, वैशेषिक, द्रव्य।

भारतीय चिन्तन परम्परा में दर्शन उस विद्या को कहते हैं, जिसके द्वारा तत्त्व का साक्षात्कार किया जाता है। दर्शनों का उपदेश वैयक्तिक जीवन के सम्मार्जन और परिष्करण के लिए अधिक उपयोगी है। बिना दर्शनों के आध्यात्मिक पवित्रता एवं उन्नयन होना दुर्लभ है। दर्शनशास्त्र ही हमें प्रमाण और तर्क के सहारे अन्धकार में दीपज्योति प्रदान करके हमारा मार्गदर्शन करता है। साथ ही जीवन को सुखी बनाने का उपाय भी प्रस्तुत करता है।

दर्शन के बीजग्रन्थ निःसन्देह वेद एवं उपनिषद् है किन्तु दर्शनों की संख्या का परिचय सर्वप्रथम हमें महाभारत में उपलब्ध होता है जहाँ सांख्य, योग, पाशुपत, पा_चरात्र तथा वेदान्त इत्यादि पाँच दर्शनों की गणना की गयी है।

भारतीय दर्शन को दो वर्गों में रखा गया है– 'आस्तिक एवं नास्तिक' जैन, बौद्ध तथा चार्वाक दर्शन को नास्तिक दर्शन के नाम से अभिहित किया गया है तथा सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) को आस्तिक षड्दर्शन के अन्तर्गत रखा गया है।

बाण ने हर्षचरित की रचना जिस समय की थी उस समय बौद्ध धर्म अपने चर्मोत्कर्ष पर था और दर्शन का भी प्रचार प्रसार था। 'युज्यध्वं बुद्धशासने' का उद्घोष चारों और सुनायी पड़ रहा था। बाण ने अपने ग्रन्थ में बौद्ध दर्शन के अतिरिक्त चार्वाक, जैन, पाशुपत, सांख्य न्याय और योग सभी आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों को समाहित किया है।

हर्षचरित में बाण ने एक स्थल पर सभी दर्शन के साथ लोकायतिक विद्या का उल्लेख किया है–कपिलैजैनैलोकायतिकैः..... ।[i] चार्वाक दर्शन को ही लोकायत दर्शन भी कहते हैं।[ii]

इस दर्शन में कहा गया है–

यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा धृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।[पपप]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अर्थात् जब तक जीवित रहें, तब तक सुखपूर्वक जीवित रहें उधार लेकर घृत–पान करें, शरीर के जलने के बाद शरीर को किसने आते देखा है।

बाण ने हर्षचरित में कई स्थलों पर जैनदर्शन का उल्लेख किया है। बाण ने जैनदर्शन के लिए 'आर्हत्' शब्द उल्लेख किया है–**'एकान्तोपविष्टैश्च जैनेरार्हतैः..... ।**[iv]

बाण ने हर्षचरित में नग्न (दिगम्बर) जैन साधु के लिए क्षपणक शब्द का उल्लेख किया है। ये लोग हाथ में मोर के पंखों की पीछी रखते हैं और बहुत दिनों तक स्नान न करने से अत्यन्त मैले रहते हैं – **लुंचिता पिच्छिकाहस्ताः..... ।**[v] जैनदर्शन भारतीय दर्शन की वह विचारधारा है जो इस ब्रह्माण्ड को अनेक द्रव्यों से निर्मित मानती है और यह प्रत्येक आत्मा का स्वतंत्र अस्तित्व मानती है।

हर्षचरित में जैनदर्शन के बहुत ही कम प्रस उपलब्ध होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि बाण को यह दर्शन दर्शनशास्त्र न होकर एक धार्मिक सम्प्रदाय के रूप प्रतीत होता है।

हर्षचरित के अनुशीलन से ज्ञाता होता है कि बाणभट्ट बौद्ध दर्शन के ज्ञात थे। उन्होंने अपने इस ग्रन्थ में कई स्थलों पर बौद्धदर्शन सम्बन्धी प्रसों का वर्णन किया है।

बाण ने हर्षचरित में कोश और बोधिसत्त्व–जातक का उल्लेख किया है। कोश से तात्पर्य वसुबन्ध–कृत अभिधर्मकोश से है। टीकाकार शंकर ने भी कोश का अर्थ बौद्धग्रन्थ ही लिखा है। यह ग्रन्थ बाण के समय में विशेष मान्य था। बौद्ध संन्यासी दिवाकरमित्र के आश्रम में भी शाक्यशासन में प्रवीण विद्वानों द्वारा कोश का उपदेश दिये जाने का उल्लेख मिलता है–**शुकैरपि शाक्यशासनकुशलैः कोश समुपदेशद्भिः ।**[vi]

बाण ने त्रिसरण[vii] शिक्षापद, शील, मैत्री एवं करुणा–बौद्धदर्शन के इन पारिभाषिक शब्दों को भी हर्षचरित में प्रयुक्त किया है। बुद्ध, धर्म और संघ ये त्रिशरण कहे जाते हैं। बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि संघं सरणं गच्छामि में बुद्ध, धर्म और संघ इन तीनों की शरण में जाने की बात कही गयी है।

मैत्री और करुणा चार अप्रमाणों में है। चार अप्रमाण ये हैं–मैत्री, करुणा, मुद्रिता और उपेक्षा।

हर्षचरित में बाण ने बौद्धदर्शन के अर्थवादशून्य का उल्लेख किया है–**जिनस्येवार्थवादशून्यानि दर्शनानि।**

उक्त वाक्य में बाण ने बौद्धों के योगाचार और माध्यमिक दर्शनों की ओर संकेत किया है। ये दोनों ही दर्शन उस युग में दार्शनिक जगत् में ऊँचाई पर थे। ये दर्शन क्षणिकत्व में विश्वास करते हैं और इनके विचार में केवल विज्ञान ही तात्त्विक हैं, और अर्थ या भौतिक जगत् असत्य है–

दृश्यते न विद्यते बाह्यं चित्तं चित्रं हि दृश्यते।
देहभोगप्रतिष्ठानं चित्तमात्रं वदाम्यहम्।।

हर्षचरित में न्याय–वैशेषिक के कई उद्धरणों का उल्लेख मिलता है। बाण ने एक स्थल पर प्रमाणगोष्ठी की चर्चा की है– **सैव वा पुरातनी परित्यक्तान्यकर्त्तव्या प्रमाणगोष्ठी..... ।**[viii]

न्याय दर्शन में निरूपित किया गया है कि प्रमाण, प्रमेय आदि के तत्त्वज्ञान से मोक्ष मिलता है। प्रमा का साधन प्रमाण कहा जाता है।[ix] प्रमा यथार्थानुभव को कहते है।[x] बाण ने हर्षचरित में परमाणु, समवाय और द्रव्य आदि पारिभाषिक पदों का उल्लेख किया है– **प्रायेण परमाणव इव समवायेष्वनुगुणीभूय**

द्रव्यं कुर्वन्ति पार्थिवं क्षुद्राः।[xi] न्याय–वैशेषिक के अनुसार प्रमाण चार हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

द्रव्य और समवाय ये दोनों ही शब्द न्याय–वैशेषिक दर्शन में पारिभाषिक शब्द हैं। द्रव्य नौ हैं– पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन।

जो पदार्थ समवायिकारण होता है उसे द्रव्य कहते हैं या जो गुणों का आश्रय रहता है **'गुणाश्रयत्वं द्रव्यत्वम्' उसे द्रव्य कहते हैं। 'समवायिकारणं** द्रव्यम्' वैशेषिकोक्त द्रव्यादि छः पदार्थों में समवाय भी एक पदार्थ है– **ते च द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाः।**

बाण ने महाभूत–पद का उल्लेख किया है– **पंचमहाभूतपंचकु– लाधिष्ठितान्तः करणव्यहारदर्शननिपुणाः।**

हर्षचरित में सांख्यदर्शन के सत्व, रजस् और तमस्–इन तीनों गुणों की चर्चा की गयी है। सांख्य के अनुसार सत्व गुण हल्का और प्रकाशक होता है, रजस् च_चल एवं उत्तेजक होता है और तमस् भारी तथा अवरोधक होता है।[गपप] यद्यपि इन तीनों गुणों के धर्म भिन्न–भिन्न है फिर भी एक पुरुष में सुख, दुःख तथा मोहादि का अनुभव होता है। अतः ये गुण इसके लिए निरन्तर क्रियाशील रहते हैं।

बाण ने हर्षचरित में सांख्य के '**सत्कार्यवाद सिद्धान्त'** को ग्रहण किया है– **बुद्धयः सर्वानर्थानसतः सतो वा।** इस सिद्धान्त के अनुसार 'सत्' कारण से ही कार्य उत्पन्न होता है तथा वह कार्य भी 'सत्' ही उत्पन्न होता है अर्थात् कारणों में उसके व्यापार के पूर्व अनभिव्यक्त रूप से विद्यमान कार्य ही कारण व्यापार के पश्चात् अभिव्यक्त रूप में उत्पन्न होता है।

योगदर्शन के अनुसार शरीर इन्द्रिय एवं चित्त की शुद्धि के लिए अष्टांग योग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आदि द्वारा होती है।[xiii]

अष्टांग योग के अन्तर्गत आने वाले 'नियम' पद का उल्लेख बाण ने हर्षचरित में किया है– **नेमि नियमस्य तत्त्वं तपसः शरीरं शौचस्य.....**।[xiv] नियम योग का अंग है–शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वरप्राणिधान–

बाण ने ''मीमांसा'' शब्द की चर्चा की है। बाण ने हर्षचरित में 'अधिकरण' का उल्लेख किया है– **वाक्यविदामधिकरणविचाराः।**[xv]

जैमिनीकृत पूर्वमीमांसा अध्यायों में विभक्त है। अध्याय पादों में और पाद अधिकरणों में विभक्त है। प्रत्येक अधिकरण में सूत्र है, जो पूर्णतः एक ही विषय का प्रतिपादन करते हैं। अधिकरण के पाँच अंग हैं–विषय, विशय (सन्देह), पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष तथा सिद्धान्त। कुछ लोगों के अनुसार अधिकरण के पाँच अंग ये हैं– विषय, सन्देह, संगति, पूर्वपक्ष और सिद्धान्त। बाण ने अर्थवाद और अनुवाद[गअप] शब्दों का प्रयोग किया है।

बाण ने ब्रह्मवादिनः का उल्लेख किया है।[xvii] संसार की असारता का उपदेश देने वाले ब्रह्मवादी शांकरवेदान्त के अनुयायियों का स्मरण दिलाते हैं– **'मीमांसको जैमिनीये वेदान्तो ब्रह्मवादिनि'।** इनके मत में कहा गया है– **ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मौवनापरः।**

सन्दर्भ

i हर्षचरित– 8/738

ii सर्वदर्शनसंग्रह पृ0–2

iii सर्वदर्शनसंग्रह–पृ0 11

iv हर्षचरित– 2/156

v सर्वदर्शनसंग्रह

vi हर्षचरित–8/738

vii त्रिसरणपरैः परमोपासकैः.....। वही

viii हर्षचरित–3/228

ix प्रमाकरणं प्रमाणम्। तर्कभाषा पृ013

x यथार्थानुभवः प्रमा। तर्कभाषा पृ014

xi हर्षचरित–4/ 406

xii सांख्यकारिका–13

xiii पातऋजल योगदर्शन 2/29

xiv हर्षचरित–8/739

xv हर्षचरित–2/207

xvi निष्कारणस्त्रवोपकार इत्यनुवादः। हर्षचरित 3/322

xvii संसारासारत्वकथनकुशला ब्रह्मवादिनः। हर्षचरित–5/530